RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

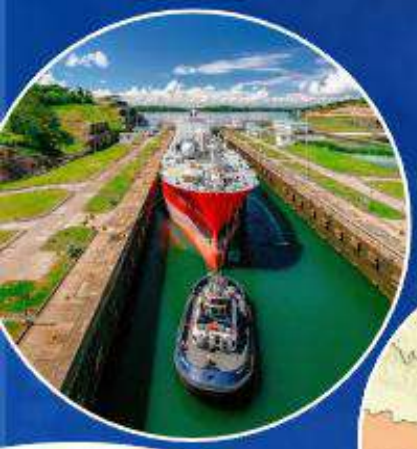

DATE
दिसंबर
23
2024

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

सिलीगुड़ी कॉरिडोर / Siliguri Corridor

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सिलीगुड़ी कॉरिडोर को उत्तर-पूर्व भारत के लिए अहम कड़ी बताया और कहा कि वहां SSB की मौजूदगी पूरे देश के लिए विश्वास का प्रतीक है।

सिलीगुड़ी कॉरिडोर के बारे में:

सिलीगुड़ी कॉरिडोर, जिसे "चिकन नेक" भी कहा जाता है, एक पतला भूभाग है जो सात उत्तर-पूर्वी भारतीय राज्यों को पश्चिम बंगाल और शेष भारत से जोड़ता है।

- यह कॉरिडोर ब्रिटिश उपनिवेशवाद के बाद के नक्शे का हिस्सा है और भारत की भौगोलिक संरचना में इसे बेहद संवेदनशील बनाता है।
- इसकी लंबाई लगभग 60 किलोमीटर है, जबकि सबसे संकरी जगह पर यह केवल 22 किलोमीटर चौड़ा है।

भौगोलिक स्थिति:

- यह क्षेत्र महानंदा और तीस्ता नदियों के बीच स्थित है।
- इसकी चौड़ाई सबसे संकरी जगह पर लगभग 22 किलोमीटर है।
- इसके पश्चिम में नेपाल, उत्तर में भूटान, और दक्षिण में बांग्लादेश की सीमाएं हैं।
- इस क्षेत्र की सामरिक संवेदनशीलता इसलिए भी बढ़ जाती है क्योंकि रेल आधारित माल ढुलाई के लिए केवल एक रेलवे लाइन है।

रणनीतिक महत्व:

- यह क्षेत्र पूर्वी भारत का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण रणनीतिक इलाका है।
- इसकी चीन, नेपाल और बांग्लादेश की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पास स्थित होने के कारण इसका सैन्य महत्व और भी बढ़ जाता है।
- उत्तर-पूर्व भारत के 40 मिलियन लोगों और देश के अन्य हिस्सों के बीच सभी स्थल व्यापार सिलीगुड़ी कॉरिडोर के माध्यम से होता है।
- भारत और बांग्लादेश के बीच मुक्त व्यापार समझौते की अनुपस्थिति इस निर्भरता को और बढ़ा देती है।

सिलीगुड़ी कॉरिडोर का महत्व:

1. **भू-राजनीतिक महत्व:**
   - यह भारतीय मुख्य भूमि को उत्तर-पूर्वी राज्यों से जोड़ने वाला एकमात्र स्थल मार्ग है।
   - इन राज्यों के लिए भारत से जुड़ने का मुख्य माध्यम है।
2. **सैन्य और सुरक्षा:**
   - इस कॉरिडोर पर नियंत्रण रक्षा के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।
   - सशस्त्र बलों की तैनाती और आवाजाही में इसकी अहम भूमिका है।
3. **व्यापार और परिवहन:**
   - भारत और उसके उत्तर-पूर्वी राज्यों के बीच व्यापार का मुख्य मार्ग है।
   - पड़ोसी देशों से संपर्क के लिए भी यह एक महत्वपूर्ण रास्ता है।
4. **रणनीतिक संवेदनशीलता:**
   - इसकी संकरी चौड़ाई (21 किलोमीटर) इसे अवरोधों के लिए बेहद संवेदनशील बनाती है।
   - किसी भी बाधा से उत्तर-पूर्व और शेष भारत के बीच संपर्क टूट सकता है।

सिलीगुड़ी कॉरिडोर की चुनौतियां:

1. **भौगोलिक संवेदनशीलता:**
   - इसकी संकरी चौड़ाई इसे बाढ़ और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बनाती है।
   - ऐसी आपदाएं इस क्षेत्र की संपर्क व्यवस्था बाधित कर सकती हैं।
2. **सुरक्षा से जुड़े मुद्दे:**
   - सीमा पार आतंकवाद, अवैध प्रवास और बांग्लादेश से होने वाली तस्करी सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती हैं।
   - अतीत में इस क्षेत्र में उग्रवाद की घटनाएं हुई हैं, जिससे सतर्कता बनाए रखना आवश्यक है।
3. **बुनियादी ढांचे की कमी:**
   - क्षेत्र के महत्व के बावजूद, इसमें सड़क और रेल संपर्क की कमी है।
   - यह कमी परिवहन और लॉजिस्टिक्स को प्रभावित करती है, जिससे विकास में बाधा आती है।

बिम्सटेक / BIMSTEC

भारत ने थाईलैंड द्वारा वर्चुअल रूप से आयोजित 24वीं BIMSTEC वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक (SOM) में भाग लिया।

बिम्सटेक (BIMSTEC) के बारे में:

- **स्थापना:** बिम्सटेक की स्थापना 1997 में बैंकॉक घोषणा पत्र को अपनाने के साथ हुई।
- **उद्देश्य:** बंगाल की खाड़ी क्षेत्र के देशों के बीच बहुआयामी तकनीकी और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना।
- **मुख्यालय:** 3वें बिम्सटेक शिखर सम्मेलन (म्यांमार) में बिम्सटेक सचिवालय की स्थापना ढाका, बांग्लादेश में की गई।
- **सदस्य देश:** बिम्सटेक के सात सदस्य देश हैं - बांग्लादेश, भूटान, भारत, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका और थाईलैंड।

- **संरचना:** यह पांच स्तरों में कार्य करता है:
  1. शिखर सम्मेलन (राज्य/सरकार के प्रमुख)
  2. मंत्री स्तरीय बैठक (विदेश मंत्री)
  3. क्षेत्रीय मंत्री स्तरीय बैठकें (संबंधित क्षेत्र के मंत्री)
  4. वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक (विदेश सचिव/वरिष्ठ अधिकारी)
  5. स्थायी कार्य समिति (राष्ट्रीय संपर्क बिंदुओं के वरिष्ठ अधिकारी)।

नाम परिवर्तन का इतिहास:

- प्रारंभ में **इसे "बिस्ट-ईसी" (BIST-EC)** कहा गया और इसमें चार सदस्य थे - बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड।
- 1997 में म्यांमार के जुड़ने के बाद इसे **"बिम्सट-ईसी" (BIMST-EC)** नाम दिया गया।
- 2004 में नेपाल और भूटान के शामिल होने पर इसका **नाम "बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल" (Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation)** रखा गया।

बिम्सटेक का महत्व:

1. **क्षेत्रीय सहयोग:** बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में कभी गहरा आपसी जुड़ाव था, लेकिन स्वतंत्रता के बाद यह सहयोग घट गया।
   - बिम्सटेक का उद्देश्य देशों के बीच कनेक्टिविटी और साझा हितों को पुनर्जीवित करना है।
2. **क्षेत्र-आधारित सहयोग:** बिम्सटेक अन्य क्षेत्रीय संगठनों जैसे सार्क या आसियान से अलग तरीके से कार्य करता है।
   - यह सहयोग के क्षेत्रों को सदस्यों के बीच विभाजित करता है, जैसे भारत परिवहन, पर्यटन और आतंकवाद विरोधी क्षेत्रों का नेतृत्व करता है।
3. **भारत की नीति के अनुरूप:** बिम्सटेक भारत की "एक्ट ईस्ट" नीति और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में उसके व्यापक उद्देश्यों के साथ मेल खाता है।
4. **सार्क से बदलाव:**
   - 2016 के उरी हमले के बाद, भारत ने सार्क से बिम्सटेक की ओर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि भारत-पाकिस्तान तनाव के कारण सार्क की प्रगति रुक गई थी।
   - बिम्सटेक क्षेत्रीय सहयोग के लिए एक वैकल्पिक मंच बन गया।
5. **भूमि और समुद्री व्यापार की क्षमता:**
   - बिम्सटेक में भूमि और समुद्री व्यापार की बड़ी क्षमता है।
   - हालांकि, सदस्य देशों को सीमा पार व्यापार, समुद्री व्यापार, और साझा तटीय शिपमेंट प्रणाली विकसित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

बिम्सटेक की चुनौतियां और बाधाएं:

1. **धीमी प्रगति:** कार्यक्षमता की कमी और धीमी गति से कार्यान्वयन प्रमुख चुनौतियां हैं।
2. **वित्तीय और संचालन संबंधी समस्याएं:** बिम्सटेक सचिवालय को वित्तीय संसाधनों और जनशक्ति की कमी का सामना करना पड़ता है।
3. **राजनीतिक समस्याएं:** आंतरिक संघर्ष, जैसे रोहिंग्या संकट, भारत-नेपाल सीमा विवाद, और म्यांमार की राजनीतिक अस्थिरता, प्रगति में बाधा बने हुए हैं।
4. **समुद्री और मत्स्य पालन संबंधी मुद्दे:** बंगाल की खाड़ी लाखों लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है, लेकिन तटीय शिपमेंट और मत्स्य पालन के मुद्दों पर सहयोग अपर्याप्त रहा है।

अमेरिका: 2035 तक 61% उत्सर्जन में कटौती / America: 61% emissions cut by 2035

अमेरिका ने पेरिस समझौते के तहत अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) को अपडेट करते हुए 2035 तक उत्सर्जन में 2005 के स्तर से 61-66% की कमी करने का लक्ष्य घोषित किया है।

मुख्य बिंदु:

1. **उत्सर्जन कटौती लक्ष्य:** अमेरिका ने 2035 तक 2005 के स्तर से 61-66% तक उत्सर्जन कम करने का लक्ष्य घोषित किया।
2. **पहले से मौजूद लक्ष्य:** यह लक्ष्य 2030 तक 2005 के स्तर से 50-52% उत्सर्जन कटौती के मौजूदा लक्ष्य पर आधारित है।
3. **NDC का दूसरा दौर:** पेरिस समझौते के तहत, 2035 के लिए राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC) का दूसरा दौर अब तय किया जा रहा है।
4. **समय सीमा:** अगले साल फरवरी तक सभी देशों को 2035 के लिए अपने NDC जमा करने होंगे।
5. **2020 लक्ष्य पूरा:** अमेरिका ने 2020 तक 2005 के स्तर से 17% उत्सर्जन कटौती का लक्ष्य पूरा किया।

जलवायु परिवर्तन और अमेरिका की जिम्मेदारी:

1. **उत्सर्जन में कटौती का लक्ष्य:**
   - अमेरिका को 2030 तक 2005 के स्तर से 62-65% उत्सर्जन में कटौती करनी होगी ताकि 1.5°C तापमान वृद्धि के लक्ष्य के अनुरूप हो सके।
   - वर्तमान में, अमेरिका ने इस स्तर को 2035 तक हासिल करने का लक्ष्य रखा है, जो निर्धारित समय सीमा से पीछे है।
2. **वैश्विक उत्सर्जन में कटौती:**
   - IPCC के अनुसार, 2030 तक वैश्विक उत्सर्जन को 2019 के स्तर से 43% कम करना आवश्यक है ताकि 1.5°C लक्ष्य को जीवित रखा जा सके।
   - अमेरिका के लिए यह लक्ष्य अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐतिहासिक उत्सर्जन में इसका बड़ा योगदान है।
3. **अमेरिका का प्रदर्शन:**
   - 2030 तक, अमेरिका अपने 2019 के उत्सर्जन स्तर से 46% कटौती का अनुमान लगा रहा है।
   - यह वैश्विक लक्ष्य (43%) से अधिक है, लेकिन ऐतिहासिक उत्सर्जन के संदर्भ में इसे अपर्याप्त माना जा रहा है।

उत्सर्जन क्या है?

उत्सर्जन (Emission) से तात्पर्य उन गैसों और कणों के वातावरण में उत्सर्जन से है, जो मानव गतिविधियों या प्राकृतिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं। मुख्य ग्रीनहाउस गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4), नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O) और फ्लोरोकार्बन शामिल हैं।

जलवायु परिवर्तन में उत्सर्जन का प्रभाव:

- **ग्लोबल वार्मिंग:** ग्रीनहाउस गैसों का बढ़ता उत्सर्जन पृथ्वी के वायुमंडल में गर्मी को फँसाता है, जिससे वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है। औद्योगिक क्रांति के बाद से, CO_2 की मात्रा में लगभग 30% की वृद्धि हुई है।
- **मौसम में परिवर्तन:** उत्सर्जन के कारण मौसम पैटर्न में बदलाव हो रहा है, जिससे सूखा, बाढ़, और तूफानों की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हो रही है।
- **समुद्र स्तर में वृद्धि:** ग्लेशियरों के पिघलने और समुद्र के तापमान में वृद्धि के कारण समुद्र स्तर बढ़ रहा है, जिससे तटीय क्षेत्रों में बाढ़ और भूमि क्षरण की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

चुनौतियाँ:

- **ऊर्जा क्षेत्र पर निर्भरता:** भारत में बिजली उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता के कारण CO_2 उत्सर्जन का एक तिहाई हिस्सा ऊर्जा क्षेत्र से आता है। अकार्बनीकरण की दिशा में कदम उठाना आवश्यक है।
- **आर्थिक प्रभाव:** एशियाई विकास बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के कारण भारत की GDP में 2070 तक 25% तक की कमी हो सकती है।
- **प्राकृतिक आपदाएँ:** बढ़ती बारिश और चरम मौसम की घटनाओं के कारण भूस्खलन और बाढ़ की घटनाओं में वृद्धि हो रही है, जिससे जनजीवन और बुनियादी ढाँचे पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
- **मानवाधिकारों पर प्रभाव:** जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियाँ विशेषकर कमजोर समुदायों, जैसे आदिवासी लोगों, की पारंपरिक आजीविका को प्रभावित कर रही हैं, जिससे उनके मानवाधिकारों पर असर पड़ रहा है।

बकू, अजरबैजान में आयोजित COP29 सम्मेलन में विकसित देशों ने जलवायु वित्त **को $100 बिलियन से बढ़ाकर $300 बिलियन प्रति वर्ष** करने का संकल्प लिया है। यह लक्ष्य 2035 तक प्राप्त किया जाएगा।

रुपये का अवमूल्यन / Devaluation of rupee

भारतीय रुपये की विनिमय दर अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 85 के स्तर को पार कर गई है। इसका मतलब है कि अब $1 खरीदने के लिए ₹85 चुकाने होंगे। अप्रैल में यह दर करीब ₹83 थी, जबकि एक दशक पहले, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कार्यभार संभाला था, यह दर ₹61 के आसपास थी।

रुपये का अवमूल्यन (Devaluation of rupee):

जब एक देश की मुद्रा (Currency) की कीमत दूसरी मुद्रा के मुकाबले घटती है, तो इसे मुद्रा का अवमूल्यन (Currency Depreciation) कहते हैं। भारतीय रुपया भी समय-समय पर प्रमुख मुद्राओं, खासकर अमेरिकी डॉलर के मुकाबले कमजोर हुआ है।

रुपये के अवमूल्यन (Devaluation of rupee) के कारण:

1. **कच्चे तेल की कीमतों में बढ़ोतरी:** वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने से भारत का आयात खर्च बढ़ा है, जिससे रुपये पर दबाव पड़ा है।
2. **चीन को पूंजी प्रवाह:** विदेशी निवेशक (FPIs) भारत से अपने निवेश हटाकर चीन की ओर बढ़ रहे हैं। चीन की नई मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों ने उनकी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया है।
    - इस बदलाव को "Sell India, Buy China" रणनीति कहा जा रहा है।
3. **डॉलर की बढ़ती मांग:** विदेशी बैंकों द्वारा अमेरिकी डॉलर की अधिक मांग के कारण रुपये की कीमत और गिरी है।
4. **घरेलू बाजार की कमजोरी:** भारत के शेयर और बांड बाजारों में कमजोरी से विदेशी निवेशकों का विश्वास घटा है, जिससे रुपये पर और दबाव बढ़ा है।

रुपये के अवमूल्यन के प्रभाव:

1. **निर्यात और आयात पर प्रभाव:**
    - कमजोर रुपया भारतीय उत्पादों को विदेशी बाजार में सस्ता बनाकर निर्यात बढ़ा सकता है।
    - लेकिन आयात महंगा हो जाता है, खासकर तेल और मशीनरी जैसी आवश्यक चीजें।
2. **विदेशी कर्ज का बोझ:** जिन कंपनियों और सरकार का कर्ज विदेशी मुद्रा में है, उनके लिए कर्ज चुकाना महंगा हो जाता है।
3. **मुद्रास्फीति (Inflation):** आयात महंगा होने से रोजमर्रा की चीजों के दाम बढ़ सकते हैं, जिससे आम लोगों की क्रय शक्ति पर असर पड़ता है।
4. **निवेशकों का विश्वास:** रुपये की गिरावट से विदेशी निवेशकों का भरोसा कम हो सकता है, जिससे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और पूंजी प्रवाह में कमी आती है।

रुपये की स्थिरता में RBI की भूमिका :

1. **विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप:**
    - RBI विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप करके डॉलर खरीदता या बेचता है।
    - इसका उद्देश्य रुपये की कीमत में अत्यधिक उतार-चढ़ाव को रोकना होता है।
2. **मौद्रिक नीति समायोजन:**
    - RBI ब्याज दरों को बदलकर पूंजी प्रवाह को नियंत्रित करता है।
    - उच्च ब्याज दरें विदेशी निवेश को आकर्षित करती हैं, जिससे रुपये का मूल्य स्थिर रहता है।
3. **विदेशी मुद्रा भंडार प्रबंधन:**
    - RBI पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार बनाए रखता है।
    - इसका उपयोग रुपये की अस्थिरता के समय स्थिरता लाने के लिए किया जाता है।

आगे की दिशा:

1. **दीर्घकालिक निवेश पर जोर:**
    - रुपये की स्थिरता के लिए दीर्घकालिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) पर ध्यान देना चाहिए।
    - अस्थिर विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) पर निर्भरता कम करनी चाहिए।
2. **प्रेषण को बढ़ावा देना:**
    - भारत प्रेषण के मामले में विश्व में अग्रणी है।
    - अनिवासी भारतीयों (NRIs) को धन भेजने के लिए आसान नीतियां लागू करनी चाहिए।
    - इससे विदेशी मुद्रा प्रवाह बढ़ेगा और रुपये की स्थिरता सुनिश्चित होगी।
3. **निर्यात प्रतिस्पर्धा बढ़ाना:**
    - तकनीकी, दवा, वस्त्र और निर्माण क्षेत्रों में निवेश करना चाहिए।
    - निर्यात की प्रतिस्पर्धा बढ़ाकर विदेशी मुद्रा आय को मजबूत किया जा सकता है।

भारत-कुवैत संबंध / India–Kuwait relations

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कुवैत का सर्वोच्च सम्मान "ऑर्डर ऑफ मुबारक अल-कबीर" से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें भारत और कुवैत के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में उनके योगदान के लिए दिया गया।

- इसके साथ ही, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अब तक 20 अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं, जो उनकी वैश्विक कूटनीति और नेतृत्व क्षमता को दर्शाते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कुवैत यात्रा:

- **इतिहासिक पहल:** यह 43 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली कुवैत यात्रा होगी।
- **उद्देश्य:**
  - द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करना।
  - व्यापार, ऊर्जा और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देना।
- **महत्व:**
  - भारत और कुवैत के बीच रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करना।
  - खाड़ी देशों के साथ भारत की वैश्विक पहुंच और संबंधों को और सुदृढ़ करना।

प्रमुख समझौते (Key Agreements):

1. **रक्षा सहयोग पर समझौता ज्ञापन (MoU):** भारत और कुवैत के बीच रक्षा क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए समझौता।
2. **सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (CEP):** 2025-2029 के लिए सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा देने पर समझौता।
3. **खेल सहयोग पर कार्यकारी कार्यक्रम:** 2025-2028 के लिए खेल सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से समझौता।
4. **अंतरराष्ट्रीय सोलर एलायंस (ISA):** कुवैत ने ISA में सदस्यता ली।
5. **रणनीतिक पेट्रोलियम भंडारण:** भारत के साथ कुवैत का सहयोग।
6. **व्यापार और निवेश:** द्विपक्षीय निवेश संधि (Bilateral Investment Treaty) को जल्द अंतिम रूप देने पर सहमति।
7. **शैक्षणिक और स्वास्थ्य सहयोग:** शैक्षणिक तकनीक, डिजिटल लर्निंग और भारतीय फार्मा कंपनियों के सहयोग पर चर्चा।
8. **संयुक्त कार्य समूह (JWGs):** व्यापार, शिक्षा, ऊर्जा, कृषि, और संस्कृति में सहयोग के लिए नए JWGs की स्थापना।

भारत-कुवैत द्विपक्षीय संबंध:

1. मजबूत ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध:

- भारत और कुवैत के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर आधारित एक गहरी और मैत्रीपूर्ण साझेदारी है।

2. आर्थिक संबंध:

व्यापार:

- भारत, कुवैत का एक स्वाभाविक व्यापारिक भागीदार है।
- 1961 तक, कुवैत में भारतीय रुपया एक वैध मुद्रा थी।
- तेल विकास से पहले, कुवैत की अर्थव्यवस्था जहाज निर्माण, मोती मछली पकड़ने, और भारत के साथ समुद्री व्यापार पर आधारित थी।
- 2023-24 में द्विपक्षीय व्यापार:
  - कुल व्यापार: 10.47 बिलियन USD
  - भारतीय निर्यात में 34.7% की वृद्धि।
- कुवैत भारत का 6वां सबसे बड़ा कच्चे तेल का आपूर्तिकर्ता है, जो भारत की ऊर्जा जरूरतों का 3% पूरा करता है।

निवेश:

- कुवैत इन्वेस्टमेंट अथॉरिटी (KIA) ने भारत में 10 बिलियन USD से अधिक का निवेश किया है।
- भारतीय सार्वजनिक उपक्रम और निजी कंपनियां जैसे: एयर इंडिया, एलएंडटी, विप्रो कुवैत में कार्यरत हैं।

कुवैत के बारे में

1. **स्थान:** कुवैत पश्चिम एशिया में स्थित एक देश है, जो मध्य पूर्व का हिस्सा है।
   - **सीमाएं:**
     - उत्तर में: इराक
     - दक्षिण में: सऊदी अरब
     - समुद्री सीमा: ईरान के साथ, जो फारस की खाड़ी के पार है।
2. **राजधानी:** **कुवैत सिटी**
3. **अर्थव्यवस्था:**
   - यह एक उच्च आय वाला देश है।
   - यहां दुनिया के छठे सबसे बड़े तेल भंडार हैं।
4. **प्रसिद्ध नाम:** इसे **"गल्फ का हॉलीवुड"** भी कहा जाता है, इसकी जीवंत कला और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए।

JAM Trinity and Digital Revolution

जैम त्रिनिटी (जन धन योजना, आधार और मोबाइल) ने भारत में वित्तीय समावेशन और पारदर्शिता में बड़ा बदलाव किया है। इसके माध्यम से नागरिकों को सीधे लाभ दिए जा रहे हैं और डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा मिला है।

जैम त्रिनिटी: जैम त्रिनिटी (जन धन योजना, आधार और मोबाइल) एक परिवर्तनकारी पहल है, जिसका उद्देश्य भारत में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना और नागरिकों को सशक्त बनाना है।

- इस योजनाओं के त्रिकोण ने देश के बैंकिंग और कल्याण प्रणाली में क्रांति ला दी है, जिससे सीधे लाभ सही लाभार्थियों तक पहुंचना सुनिश्चित हुआ है।

भारत में JAM ट्रिनिटी के माध्यम से वित्तीय समावेशन:

- **वित्तीय समावेशन का अर्थ**: यह उपयुक्त, किफायती और सुलभ वित्तीय सेवाओं तक पहुंच और उपयोग को सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है।
- **JAM ट्रिनिटी की भूमिका**:
  - यह भारत की डिजिटल क्रांति का आधार स्तंभ है।
  - वित्तीय समावेशन और सुशासन के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाने का प्रमुख माध्यम बना।
- **शुरुआत और उद्देश्य**:
  - इसे डिजिटल इंडिया के व्यापक दृष्टिकोण के हिस्से के रूप में शुरू किया गया।
  - सार्वजनिक सेवाओं की आपूर्ति में तकनीकी उपयोग के लिए वैश्विक मानक स्थापित किए।

JAM ट्रिनिटी के मुख्य घटक:

1. जन धन योजना (PMJDY):

- 54 करोड़ खाते खोले गए, जिनमें ₹2.39 लाख करोड़ की जमा राशि है।
- 66% खाते ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, और 39% महिलाओं के नाम पर हैं।
- PMJDY खाता धारकों को 37.02 करोड़ RuPay कार्ड जारी किए गए।
- विश्व बैंक के अनुसार, भारत ने डिजिटल अवसंरचना के कारण वित्तीय समावेशन के लक्ष्य को 6 वर्षों में प्राप्त किया, जो अन्यथा 47 वर्ष लगते।

2. आधार:

- नागरिकों को अद्वितीय पहचान प्रदान करता है और कल्याणकारी योजनाओं की लक्षित डिलीवरी सुनिश्चित करता है।
- आधार लिंकिंग बैंक खातों में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) को सुगम बनाती है।

3. मोबाइल:

- मोबाइल फोन के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं की पहुंच प्रदान करता है।
- डिजिटल लेनदेन और वित्तीय समावेशन को आसान बनाता है।

JAM ट्रिनिटी का महत्व और प्रभाव:

1. प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY):

- **लॉन्च:** 2014 में हर परिवार को बैंकिंग सेवाओं की सुविधा देने के उद्देश्य से शुरू की गई।
- **खातों की संख्या:** 54 करोड़ जन धन खाते, जिनमें ₹2.39 लाख करोड़ की जमा राशि।
- **क्षेत्रीय प्रभाव:** 66% खाते ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों से हैं, विशेष रूप से महिलाओं के लिए प्रभावी।
- **मुद्रा लोन:** छोटे व्यवसायों और उद्यमियों को बिना गारंटी के सस्ती ऋण सुविधा प्रदान की।

2. आधार:

- **विश्व का सबसे बड़ा बायोमेट्रिक आईडी सिस्टम:** हर निवासी को अद्वितीय पहचान संख्या प्रदान करता है।
- **प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT):** बिचौलियों को खत्म कर ₹33 लाख करोड़ का हस्तांतरण 312 सरकारी योजनाओं के माध्यम से किया गया।
- **लीकेज में कमी:** योजनाओं का लाभ सही लाभार्थियों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. मोबाइल कनेक्टिविटी:

- **डिजिटल लेनदेन:** सरकारी सेवाओं और वित्तीय लेनदेन तक सुगम पहुंच प्रदान की।
- **UPI का योगदान:** FY 2023-24 में ₹200 लाख करोड़ के UPI लेनदेन हुए, जो 2017-18 से 138% की वृद्धि है।
- **वैश्विक भागीदारी:** विश्व के 40% रियल-टाइम भुगतान लेनदेन भारत में हो रहे हैं।

4. सामाजिक सुरक्षा योजनाएं:

- **लाइफ और एक्सीडेंट इंश्योरेंस:** 50 करोड़ से अधिक लोगों को जीवन बीमा, दुर्घटना बीमा और पेंशन योजनाओं का लाभ।
- **आयुष्मान भारत:** JAM ट्रिनिटी के माध्यम से विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य योजना, जो लाखों नागरिकों को स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करती है।

पनामा नहर / Panama Canal

अमेरिकी नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पनामा नहर के नियंत्रण पर पुनर्विचार के संकेत दिए।

- ट्रंप ने फीनिक्स, एरिज़ोना में एक रैली के दौरान नहर से गुजरने वाले जहाजों पर लगाए जा रहे "अनुचित" शुल्कों की आलोचना की।

पनामा नहर के बारे में:

- पनामा नहर एक कृत्रिम जलमार्ग है जो अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को पनामा इस्तमुस के माध्यम से जोड़ती है।
- यह दुनिया के दो सबसे महत्वपूर्ण कृत्रिम जलमार्गों में से एक है, दूसरा सूज़ नहर है।
- लगभग 80 किलोमीटर लंबी यह नहर अमेरिका द्वारा 1904 से 1914 के बीच बनाई गई और 15 अगस्त 1914 को आधिकारिक तौर पर खोली गई।
- 1999 में, नहर का नियंत्रण अमेरिका से पनामा गणराज्य को स्थानांतरित कर दिया गया, जो अब इसका स्वामित्व और प्रशासन करता है।
- पनामा नहर में कई लॉक सिस्टम हैं, जो पानी के स्तर को ऊपर-नीचे करके जहाजों को महाद्वीपीय विभाजन पार करने में मदद करते हैं।

गाटून झील के बारे में:

- **स्थान:** गाटून झील पनामा के कोलोन शहर के दक्षिण में स्थित एक मीठे पानी की कृत्रिम झील है, जो समुद्र तल से लगभग 26 मीटर ऊपर है।
- **निर्माण:** यह 27 जून 1913 को चाग्रेस नदी पर बांध बनाकर बनाई गई थी, जब गाटून डैम के द्वार बंद किए गए।
- **भूमिका:** पनामा नहर में यह झील 33 किलोमीटर तक जहाजों को ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- **विशेषता:** अपने निर्माण के समय गाटून झील दुनिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील थी।
- **जल आपूर्ति:** यह नहर के लॉक सिस्टम को संचालित करने के लिए आवश्यक लाखों लीटर पानी उपलब्ध कराती है।
- **प्राकृतिक रक्षा:** झील के आसपास की घने वर्षावन की भूभाग नहर के लिए एक प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करती है और मध्य अमेरिकी प्रजातियों का प्राकृतिक आवास है।
- **आकार:** यह झील लगभग 470 वर्ग किलोमीटर में फैली हुई है।
- **महत्वपूर्ण स्थल:** इसमें स्थित बारो कोलोराडो द्वीप स्मिथसोनियन संस्थान द्वारा संचालित वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण है।
- **पेयजल स्रोत:** गाटून झील पनामा सिटी और कोलोन को पेयजल की आपूर्ति भी करती है।

पनामा नहर का लॉक सिस्टम:

पनामा नहर ऊंचाई के अंतर को प्रबंधित करने के लिए एक उन्नत लॉक और जल एलेवेटर प्रणाली का उपयोग करती है। इसका कार्य प्रणाली इस प्रकार है:

- **लॉक चेंबर में प्रवेश:** जहाज नहर के सबसे निचले चेंबर में प्रवेश करता है, जो समुद्र तल पर होता है।
- **चेंबर में पानी भरना:** ऊपरी चेंबर से पानी भरकर जहाज को ऊपर उठाया जाता है।
- **अगले चेंबर में स्थानांतरण:** जल स्तर समान होने पर जहाज को ऊपरी चेंबर में ले जाया जाता है।
- **नीचे उतरना:** विपरीत दिशा में यात्रा करने वाले जहाजों के लिए यही प्रक्रिया उलटी की जाती है, ताकि उन्हें नीचे लाया जा सके।

महत्व:

महत्वपूर्ण रणनीतिक संपत्ति:

- पनामा नहर अमेरिका के लिए सुरक्षित, कुशल और विश्वसनीय संचालन के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि लगभग 72% जहाज या तो अमेरिकी बंदरगाहों से आते हैं या वहीं जाते हैं।
- नहर का महत्व राष्ट्रीय सुरक्षा, रक्षा क्षमताओं, कूटनीतिक संबंधों और लॉजिस्टिक लचीलापन तक फैला हुआ है।

कम दूरी का मार्ग:

- नहर न्यूयॉर्क और सैन फ्रांसिस्को के बीच की यात्रा में लगभग 12,600 किमी की बचत करती है।
- यह जहाजों को दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी सिरे पर स्थित खतरनाक और लंबी केप हॉर्न यात्रा से बचने में सक्षम बनाती है।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

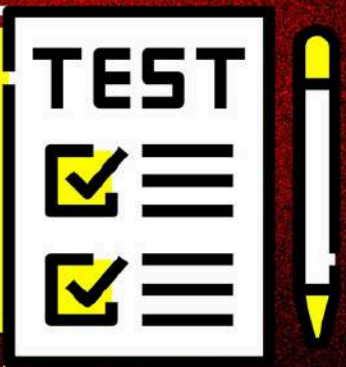

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala
7878158882
Apni.Pathshala
kaankit
AnkitAvasthiSir
Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !